

## कैकेयी का अनुताप | लौट चलो तुम घर को

"यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को |"  
चौंके सब सुनकर अटल कैकेयी स्वर को |  
सबने रानी की ओर अचानक देखा,  
बैधव्य-तुषारावृता यथा विधु-लेखा |  
बैठी थी अचल तथापि असंख्यतरंगा ,  
वह सिंही अब थी हहा ! गौमुखी गंगा ---  
"हाँ, जनकर भी मैंने न भारत को जाना ,  
सब सुन लें, तुमने स्वयं अभी यह माना |  
यह सच है तो फिर लौट चलो घर भईया ,  
अपराधिन मैं हूँ तात , तुम्हारी मईया |  
दुर्बलता का ही चिन्ह विशेष शपथ है ,  
पर ,अबलाजन के लिए कौन सा पथ है ?  
यदि मैं उकसाई गयी भरत से होऊँ ,  
तो पति समान स्वयं पुत्र भी खोऊँ |  
ठहरो , मत रोको मुझे, कहूँ सो सुन लो ,  
पाओ यदि उसमे सार उसे सब चुन लो,  
करके पहाड़ सा पाप मौन रह जाऊँ ?  
राई भर भी अनुताप न करने पाऊँ ?  
थी सनक्षत्र शशि-निशा ओस टपकाती ,  
रोती थी नीरव सभा हृदय थपकाती |  
उल्का सी रानी दिशा दीप्त करती थी ,  
सबमें भय,विस्मय और खेद भरती थी |  
'क्या कर सकती थी मरी मंथरा दासी ,  
मेरा ही मन रह सका न निज विश्वासी |  
जल पंजर-गत अरे अधीर , अभागे ,  
वे ज्वलित भाव थे स्वयं तुझी में जागे |  
पर था केवल क्या ज्वलित भाव ही मन में ?  
क्या शेष बचा था कुछ न और इस जन में ?  
कुछ मूल्य नहीं वात्सल्य मात्र , क्या तेरा ?  
पर आज अन्य सा हुआ वत्स भी मेरा |  
थूके , मुझ पर त्रैलोक्य भले ही थूके ,  
जो कोई जो कह सके , कहे, क्यों चुके ?  
छीने न मातृपद किन्तु भरत का मुझसे ,  
हे राम , दुहाई करूँ और क्या तुझसे ?  
कहते आते थे यही अभी नरदेही ,  
'माता न कुमाता , पुत्र कुपुत्र भले ही |'  
अब कहे सभी यह हाय ! विरुद्ध विधाता ,---  
'है पुत्र पुत्र ही , रहे कुमाता माता |'  
बस मैंने इसका बाह्य-मात्र ही देखा ,  
दृढ हृदय न देखा , मृदुल गात्र ही देखा |  
परमार्थ न देखा , पूर्ण स्वार्थ ही साधा ,  
इस कारण ही तो हाय आज यह बाधा !

युग युग तक चलती रहे कठोर कहानी ---  
'रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी |'  
निज जन्म जन्म में सुने जीव यह मेरा ---  
'धिक्कार ! उसे था महा स्वार्थ ने घेरा |'---"  
"सौ बार धन्य वह एक लाल की माई |"  
जिस जननी ने है जना भरत सा भाई |"  
पागल-सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई ---  
"सौ बार धन्य वह एक लाल की माई |"

गायिका - माधुरी मिश्रा  
रचयिता - मैथिली शरण गुप्त

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/1313/title/kaikayi-ka-anutaap-sung-by-Madhuri-Mishra-written-by-Maithili-Sharan-Gupt>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |